EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

"यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण -एक तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ.सुहासकुमार रूपराव पाटील
परियोजना निदेशक
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) परियोजना
शासकीय शिक्षण महाविद्यालय, यवतमाल

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन "यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों के वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन" इस महत्वपूर्ण प्रश्न को ध्यान में रखकर किया गया है। यवतमाल जिला महाराष्ट्र का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार की जीवन शैलियाँ कार्यरत हैं। यहाँ के प्राथमिक शिक्षक ग्रामीण और शहरी दोनों पृष्ठभूमियों से आते हैं | जिससे एक आदर्श अध्ययन समूह का निर्माण होता हैं। इस शोध में ४० प्राथमिक शिक्षकों को नमूने के रूप में लिया गया है, जिनमें १२ शहरी (30%) और २८ ग्रामीण (70%) शिक्षक सम्मिलित हैं। १५ प्रश्नों की संरचित प्रश्नावली के माध्यम से उनके वृद्धाश्रम संबंधी दृष्टिकोण का मापन किया गया है। शोध में स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test) जैसी सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर दोनों समूहों के दृष्टिकोण में सांख्यिकीय अंतर की जाँच की गई है। यह शोध वृद्ध कल्याण नीति निर्माण, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामाजिक जागरूकता अभियानों के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पृष्ठभूमि (ग्रामीण/शहरी) शिक्षकों के वृद्धाश्रम संबंधी दृष्टिकोण को किस सीमा तक प्रभावित करती है और इस अंतर को पाटने के लिए कौन-से कदम उठाए जाने चाहिए।

प्रस्तावना : भारतीय समाज सदैव से "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से प्रेरित रहा है, जिसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य का चाहे वह बालक हो, युवा हो अथवा वृद्ध उनका समान महत्व और सम्मान रहा है। भारतीय संस्कृति में वृद्धजनों को ज्ञान, अनुभव और परंपरा के वाहक माना जाता था। उन्हें परिवार का आधार स्तंभ समझा जाता था और उनकी देखभाल, सेवा तथा सम्मान को पुत्र-पुत्री का परम धर्म माना जाता था। संयुक्त परिवार की इस सुदृढ़ व्यवस्था में वृद्धजनों को अपनापन, सुरक्षा और आत्मीयता का वातावरण स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता था। परंतु २१वीं शताब्दी के इस आधुनिक युग में भारतीय समाज की संरचना में अभूतपूर्व परिवर्तन आए हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास की तीव्र गति ने न केवल लोगों की जीवनशैली को बदला है, बल्कि पारिवारिक मूल्यों और संबंधों को भी गहराई से प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार की परंपरागत व्यवस्था धीरे-धीरे विघटित होती जा रही है और उसका स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप वृद्धजन, जो कभी परिवार के केंद्र में होते थे, आज उपेक्षा, एकाकीपन और असुरक्षा का जीवन जीने के लिए विवश हो रहे हैं। इसी सामाजिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि में वृद्धाश्रम नामक संस्था का उदय और विस्तार हुआ है। जो समाज कभी घर में वृद्धों की सेवा को पुण्य कार्य मानता था, उस समाज में आज वृद्धाश्रमों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक भी है। वृद्धाश्रम के प्रति समाज का दृष्टिकोण अभी भी विवादास्पद है — एक वर्ग इसे आधुनिक आवश्यकता मानता है, तो दूसरा वर्ग इसे भारतीय संस्कृति के विरुद्ध और पारिवारिक दायित्व की विफलता के रूप में देखता है। इस संदर्भ में प्राथमिक शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन अत्यंत

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

महत्वपूर्ण हो जाता है। प्राथमिक शिक्षक समाज का एक अत्यंत प्रभावशाली और जागरूक वर्ग है। वे न केवल भावी पीढ़ी के निर्माता हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत और वाहक भी हैं। उनकी सोच, उनका दृष्टिकोण और उनका व्यवहार तीनों मिलकर समाज की मानसिकता को आकार देते हैं। यही शिक्षक नयी पीढी तयार करते है |यदि शिक्षक वृद्धाश्रम के प्रति सकारात्मक, यथार्थवादी और संवेदनशील दृष्टिकोण रखते हैं, तो वे अपने विद्यार्थियों और समाज को भी उसी दिशा में प्रेरित कर सकते हैं। विशेष रूप से, ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर एक महत्वपूर्ण शोध प्रश्न है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी संयुक्त परिवार की परंपरा, सामुदायिक जीवनशैली और पारंपरिक मूल्य अपेक्षाकृत अधिक मजबूत हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में एकल परिवार प्रणाली, व्यस्त जीवनशैली और आधुनिक सोच अधिक प्रभावी है। इन दोनों पृष्ठभूमियों के शिक्षकों के वृद्धाश्रम संबंधी दृष्टिकोण में अंतर होना स्वाभाविक है और इस अंतर का वैज्ञानिक अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

अनुसंधान का महत्त्व : भारत में वृद्ध जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार, भारत में वर्ष 2050 तक 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों की संख्या कुल जनसंख्या के लगभग 20% से अधिक हो जाएगी। इस बढ़ती वृद्ध जनसंख्या की देखभाल, सुरक्षा और कल्याण एक प्रमुख सामाजिक चुनौती बन चुकी है। ऐसे में वृद्धाश्रम के प्रति समाज विशेषतः शिक्षकों का दृष्टिकोण जानना आवश्यक है, क्योंकि यह दृष्टिकोण भावी सामाजिक व्यवहार और नीति को प्रभावित करता है। शिक्षक समाज की नींव होते हैं। वे जो सोचते हैं, जो मानते हैं वही अगली पीढ़ी को सिखाते हैं। यदि शिक्षकों में वृद्धाश्रम के प्रति नकारात्मक, भ्रामक अथवा अज्ञानतापूर्ण दृष्टिकोण है, तो यह उनके विद्यार्थियों और अभिभावकों तक भी पहुँचता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक, यथार्थवादी और संवेदनशील है, तो वे समाज में वृद्ध कल्याण की सोच को आगे बढ़ा सकते हैं। इस शोध से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नई दिशा मिलेगी। इस शोध में यह अनुसंधान किया गया है कि ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि शिक्षकों की मानसिकता को किस प्रकार प्रभावित करती है। पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परिवेश और जीवन अनुभव ये सभी दृष्टिकोण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। "सामाजिक-व्यक्तिगत दृष्टिकोण की दरार" जैसे मनोवैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन समाज की मानसिक संरचना को समझने में सहायक है। यवतमाल जिला महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र का एक प्रतिनिधि जिला है जहाँ ग्रामीण-शहरी जनसंख्या का मिश्रण है। यहाँ के शिक्षकों पर किया गया अध्ययन विदर्भ क्षेत्र की सामाजिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है और स्थानीय नीति निर्माण के लिए उपयोगी आँकड़े प्रदान करता है। यह शोध क्षेत्रीय स्तर पर वृद्ध कल्याण योजनाओं को दिशा देने में सहायक है।

अनुसंधान का विधान : "यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण -एक तुलनात्मक अध्ययन"

अनुसंधान की कार्यात्मक व्याख्या

वृद्धाश्रम : वृद्धाश्रम से तात्पर्य उस संस्थागत व्यवस्था से है जहाँ ६० वर्ष या उससे अधिक आयु के वृद्ध व्यक्तियों को निवास, भोजन, चिकित्सा सेवा, मनोरंजन और सामाजिक सहवास की सुविधा एक साथ उपलब्ध कराई जाती है। यह व्यवस्था विशेषतः उन वृद्धों के लिए है जो अकेले रहने में असमर्थ हैं या जिनके परिवारजन उनकी देखभाल करने में असमर्थ हैं।

दृष्टिकोण : दृष्टिकोण से अभिप्राय किसी व्यक्ति के किसी विषय के प्रति विचारात्मक, भावनात्मक और व्यवहारात्मक प्रवृत्तियों से है। इस शोध में शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सकारात्मक, नकारात्मक अथवा तटस्थ दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाएगा।

ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षक : वे प्राथमिक शिक्षक जो यवतमाल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जन्मे, पले-बढ़े अथवा वहाँ के विद्यालयों में कार्यरत हैं और जिनकी मानसिकता, मूल्य और पारिवारिक परम्पराएँ ग्रामीण संस्कृति से प्रभावित हैं।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षक : वे प्राथमिक शिक्षक जो यवतमाल शहर में जन्मे, शिक्षित हुए अथवा शहरी विद्यालयों में कार्यरत हैं और जिनकी जीवनशैली, सामाजिक मूल्य और पारिवारिक संरचना आधुनिक शहरी परिवेश से प्रभावित है।

तुलनात्मक अध्ययन : दो या दो से अधिक समूहों की विशेषताओं, दृष्टिकोणों या परिणामों की वैज्ञानिक विधि से समानताएँ और अंतर स्पष्ट करने की प्रक्रिया को तुलनात्मक अध्ययन कहते हैं। इस शोध में ग्रामीण बनाम शहरी शिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलना की जाएगी।

प्राथमिक शिक्षक : यवतमाल शहर के सरकारी, अनुदानित एवं विनाअनुदानित विद्यालयों में कक्षा 1 से 7 तक अध्यापन करने वाले नियमित रूप से नियुक्त शिक्षक, जो समाज के एक जागरूक, शिक्षित और प्रभावशाली वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अनुसंधान के प्रश्न

यवतमाल शहर के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सामान्य दृष्टिकोण क्या है?
ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षकों के वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण में क्या अंतर हैं?
शिक्षण अनुभव के आधार पर शिक्षकों के वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण में क्या अंतर है?
क्या यवतमाल शहर के शिक्षक वृद्धाश्रम को "काल की आवश्यकता" मानते हैं? यदि हाँ, तो क्यों?

अनुसंधान के उद्देश्य

यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सामान्य दृष्टिकोण जानना।
यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
शोध के आधार पर वृद्धाश्रम नीति और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु व्यावहारिक सुझाव देना।

अनुसंधान की विधि : प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया |

जनसंख्या : यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक स्तर के सभी शिक्षक यह प्रस्तुत अनुसंधान की जनसंख्या है |

न्यादर्श : प्रस्तुत अनुसंधान में सम्पूर्ण जनसंख्या में से 1 से 7 वी कक्षा को सिखाने वाले 40 प्राथमिक शिक्षको का किया गया जिसमे 20 ग्रामीण क्षेत्र के तथा 20 शहरी क्षेत्र के प्राथमिक शिक्षक जिसमे 10 पुरुष और 00 महिला शिक्षको का समावेश किया गया|

विवरण	शहरी (Urban)	ग्रामीण (Rural)	कुल
कुल प्रतिभागी	20	20	40
पुरुष शिक्षक	10	10	20
महिला शिक्षक	10	10	20
व्यवसाय	शिक्षक	शिक्षक	—
कुल प्रश्न	15	15	15

अनुसंधान की कार्यवाही : प्रस्तुत अनुसंधान के लिए अनुसंधान कर्ता ने बंद प्रश्नावली का निर्माण किया जिसमे उद्देश्य के अनुसार प्रश्न तयार किए गए | प्रथम उद्देश्य में पंधरह प्रश्नों की निर्मिती,द्वितीय उद्देश्य में दस प्रश्नों की निर्मिती तथा तृतीय उद्देश्य में बारह प्रश्नों की निर्मिती की गयी |इन प्रश्नों की प्रतिक्रिया हाँ और ना इस स्वरूप में ली गयी | गुगल फॉर्म में तयार की

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

गयी प्रश्नावली को शिक्षकों को भेजा गया और उनके प्रतिसाद लिए गए |उसके अनुसार उद्देश्यों का विश्लेषण और अर्थनिर्वचन किया गया |

उद्देश्यों का विश्लेषण और अर्थनिर्वचन

उद्देश्य क्रमांक 1 : यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सामान्य दृष्टिकोण जानना।

सारणी क्र.1

प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सामान्य दृष्टिकोण का प्रतिशत दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	प्रश्न	हाँ %	ना %
1	क्या आप मानते हैं कि आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धाश्रम एक आवश्यक संस्था है?	50	50
2	क्या आप सहमत हैं कि बदलती पारिवारिक व्यवस्था के कारण वृद्धाश्रम "काल की आवश्यकता" बन गया है?	70	30
3	क्या भारतीय समाज में वृद्धाश्रम को सकारात्मक नजरिये से देखा जाता है?	30	70
4	क्या आप मानते हैं कि वृद्धाश्रम में माता-पिता को भेजना परिवार की जिम्मेदारी की विफलता है?	80	20
5	क्या आप सहमत हैं कि वृद्धाश्रम में वृद्धों को घर की तुलना में अधिक सुरक्षित जीवन मिलता है?	10	90
6	क्या आप मानते हैं कि वृद्धाश्रमों में वृद्धों को पर्याप्त चिकित्सा सेवा और देखभाल प्राप्त होती है?	40	60
7	क्या आप सहमत हैं कि वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में अकेलापन और अवसाद की समस्या होती है?	80	20
8	क्या आप मानते हैं कि अधिकांश वृद्ध स्वैच्छिक रूप से वृद्धाश्रम में रहना पसंद करते हैं?	10	90
9	क्या आप मानते हैं कि वृद्धाश्रम वृद्धों को सामाजिक सहवास और मानवीय स्पर्श प्रदान करते हैं?	40	60
10	क्या आप सहमत हैं कि वृद्धाश्रम वृद्धों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाते हैं?	30	70
11	क्या आप सहमत हैं कि आर्थिक दबाव के कारण परिवार अपने वृद्धों को वृद्धाश्रम में भेजते हैं?	30	70
12	क्या आप मानते हैं कि वृद्धाश्रम भारतीय संस्कृति और परंपराओं के विरुद्ध है?	90	10
13	क्या आप सहमत हैं कि शहरीकरण और एकल परिवार प्रणाली वृद्धाश्रमों की माँग बढ़ा रही है?	90	10
14	क्या आप मानते हैं कि सरकार को वृद्धाश्रमों को विनियमित और सुधारने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए?	90	10
15	क्या आप अपने स्वयं के माता-पिता या परिवार के वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम को एक व्यावहारिक विकल्प मानते हैं?	10	90

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

आलेख क्र.1

यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति सामान्य दृष्टिकोण जानना।

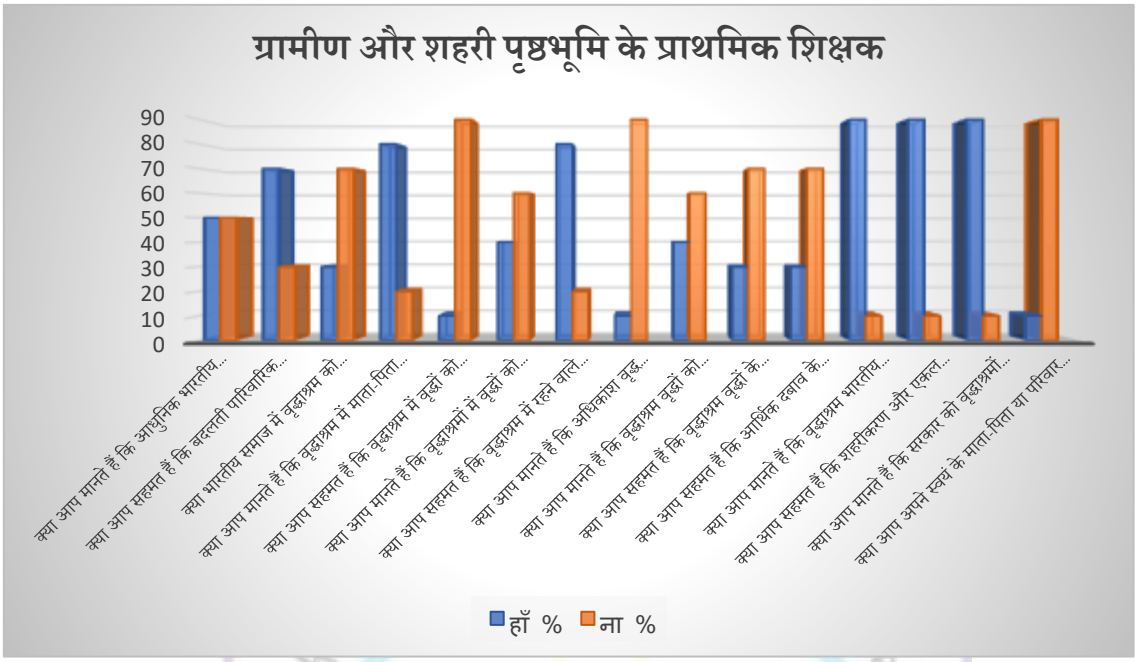

उद्देश्य क्र.1 चे विश्लेषण व अर्थनिर्वेचन

1.प्राथमिक शिक्षकों में वृद्धाश्रम की आवश्यकता को लेकर कोई स्पष्ट बहुमत नहीं है। समाज दो विचारधाराओं के बीच संतुलन बना रहा है एक जो बदलती परिस्थितियों को स्वीकार करती है और दूसरी जो पारंपरिक पारिवारिक जिम्मेदारी पर जोर देती है।

2.बहुसंख्यक शिक्षक (70%) वृद्धाश्रम को आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों की अपरिहार्य उपज मानते हैं। बदलती पारिवारिक व्यवस्था एकल परिवार, व्यस्त जीवनशैली और शहरीकरण इसके प्रमुख कारण हैं। यह शिक्षकों की सामाजिक जागरूकता और यथार्थवादी सोच को दर्शाता है।

3.भारतीय समाज में वृद्धाश्रम के प्रति सामाजिक स्वीकार्यता अभी भी अत्यंत कम है। 70% शिक्षक मानते हैं कि समाज इसे नकारात्मक दृष्टि से देखता है। यह पारंपरिक मूल्यों की गहरी पकड़ और वृद्धाश्रम के प्रति सामाजिक कलंक का स्पष्ट प्रमाण है।

4.शिक्षकों में स्पष्ट वैचारिक द्वंद्व परिलक्षित होता है। वे एक तरफ वृद्धाश्रम को आवश्यकता मानते हैं, दूसरी तरफ इसे पारिवारिक विफलता भी। 80% की उच्च सहमति दर्शाती है कि भारतीय मानस में माता-पिता की सेवा को पवित्र कर्तव्य माना जाता है और वृद्धाश्रम को इस कर्तव्य से पलायन के रूप में देखा जाता है।

5.शिक्षकों का लगभग सर्वसम्मत मत है कि घर वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम से अधिक सुरक्षित है। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष है जो दर्शाता है कि पारिवारिक सुरक्षा कवच को वृद्धाश्रम की किसी भी सुविधा से श्रेष्ठ माना जाता है। वृद्धाश्रमों की सुरक्षा व्यवस्था पर समाज का विश्वास अत्यंत कम है।

6.बहुमत शिक्षक (60%) वृद्धाश्रमों की चिकित्सा सेवाओं को अपर्याप्त मानते हैं। यह वृद्धाश्रमों में स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है। वृद्धों की बढ़ती चिकित्सा आवश्यकताओं को देखते हुए यह चिंताजनक स्थिति है जिसमें सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

7.शिक्षकों की प्रबल राय (80%) है कि वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्ध अकेलेपन और अवसाद से पीड़ित होते हैं। यह वृद्धाश्रमों की एक गंभीर कमज़ोरी उजागर करता है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं, मनोवैज्ञानिक परामर्श और सामाजिक गतिविधियों का वृद्धाश्रमों में सुदृढ़ीकरण अत्यंत आवश्यक है।

8.90% शिक्षकों की राय में वृद्ध परिस्थितियों की विवशता में वृद्धाश्रम जाते हैं, स्वेच्छा से नहीं। यह अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष है जो दर्शाता है कि वृद्धाश्रम प्रवेश प्रायः अनिच्छित निर्णय होता है। इससे वृद्धों की मनोव्यथा, पारिवारिक दबाव और विकल्पहीनता की स्थिति का बोध होता है।

9.अधिकांश शिक्षक (60%) मानते हैं कि वृद्धाश्रम वृद्धों को पर्याप्त भावनात्मक और सामाजिक जुड़ाव प्रदान करने में असमर्थ हैं। पारिवारिक प्रेम और मानवीय स्पर्श का कोई विकल्प नहीं यही शिक्षकों की सोच है। वृद्धाश्रमों में स्वयंसेवी कार्यक्रमों और सामाजिक गतिविधियों की आवश्यकता है।

10.शिक्षकों का स्पष्ट बहुमत (70%) वृद्धाश्रम को जीवन की गुणवत्ता सुधारने में अप्रभावी मानता है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष है वृद्धाश्रमों की सेवाओं, सुविधाओं और देखभाल की गुणवत्ता में आमूल सुधार किए बिना उनकी स्वीकार्यता बढ़ाना संभव नहीं होगा।

11.बहुमत शिक्षक (70%) आर्थिक दबाव को वृद्धाश्रम में प्रवेश का मुख्य कारण नहीं मानते। यह दर्शाता है कि वृद्धाश्रम में भेजने के पीछे आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक और पारिवारिक कारण जैसे व्यस्तता, उपेक्षा, बदलती मानसिकता अधिक जिम्मेदार हैं।

12.90% शिक्षकों की सर्वसम्मत राय है कि वृद्धाश्रम भारतीय संस्कृति और परंपराओं के विरुद्ध है। यह सबसे निर्णायक निष्कर्षों में से एक है। भारतीय समाज में पारिवारिक संस्कार और वृद्धों की सेवा को पवित्र कर्तव्य माना जाता है। यही कारण है कि वृद्धाश्रम को सांस्कृतिक दृष्टि से अस्वीकार्य माना जाता है।

13.90% शिक्षकों की प्रबल सहमति दर्शाती है कि शहरीकरण और एकल परिवार प्रणाली वृद्धाश्रमों की बढ़ती माँग के प्रमुख कारण हैं। यह शिक्षकों की उत्कृष्ट सामाजिक समझ का प्रमाण है। आधुनिकीकरण और पश्चिमी जीवनशैली का प्रभाव भारतीय पारिवारिक संरचना को मूलतः बदल रहा है।

14.90% शिक्षकों की प्रबल माँग है कि सरकार वृद्धाश्रमों के नियमन और सुधार में सक्रिय भूमिका निभाए। यह दर्शाता है कि वर्तमान वृद्धाश्रमों की स्थिति असंतोषजनक है और सरकारी नीति, कानून और संसाधनों के बिना सुधार संभव नहीं। यह नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत है।

15.यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। 90% शिक्षक वृद्धाश्रम को समाज के लिए आवश्यक मानते हुए भी अपने माता-पिता के लिए इसे स्वीकार नहीं करते। यह "NIMBY (Not In My Backyard)" मानसिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। भावना और तर्क के बीच यह अंतर भारतीय संस्कृति की गहरी पारिवारिक जड़ों को प्रमाणित करता है।

निष्कर्ष

50% शिक्षक वृद्धाश्रम को आवश्यक मानते हैं, 50% नहीं। यह समाज में स्पष्ट मतभेद दर्शाता है कि वृद्धाश्रम को लेकर कोई सर्वसम्मत दृष्टिकोण नहीं है। पारंपरिक और आधुनिक सोच परस्पर संघर्षरत हैं।

70% शिक्षक वृद्धाश्रम को काल की आवश्यकता मानते हैं। बदलती पारिवारिक व्यवस्था — एकल परिवार, शहरीकरण, कामकाजी जीवनशैली — का प्रभाव शिक्षकों को स्पष्ट दिखता है।

70% शिक्षक मानते हैं कि भारतीय समाज वृद्धाश्रम को नकारात्मक दृष्टि से देखता है। सामाजिक स्वीकार्यता की कमी वृद्धाश्रमों के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

80% शिक्षक वृद्धाश्रम में माता-पिता को भेजना परिवार की जिम्मेदारी की विफलता मानते हैं। यह भारतीय संस्कृति में माता-पिता की सेवा को पवित्र कर्तव्य मानने की परंपरा को प्रतिबिंबित करता है।

90% शिक्षक मानते हैं कि घर वृद्धाश्रम से अधिक सुरक्षित है। परिवार के पास जो भावनात्मक सुरक्षा कवच है, वह वृद्धाश्रमों में नहीं मिल सकता।

60% शिक्षक वृद्धाश्रमों में चिकित्सा सेवा और देखभाल को अपर्याप्त मानते हैं। वृद्धों की जटिल स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा तत्काल आवश्यक है।

80% शिक्षक वृद्धाश्रम में वृद्धों में अकेलापन और अवसाद को गंभीर समस्या मानते हैं। परिवार से अलगाव और सीमित सामाजिक संपर्क वृद्धों के मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं।

90% शिक्षक मानते हैं कि वृद्ध स्वेच्छा से नहीं, बल्कि परिस्थितियों के दबाव में वृद्धाश्रम जाते हैं। यह विवशता, परिवार द्वारा त्याग और वृद्धों की असहायता को उजागर करता है।

60% शिक्षक मानते हैं कि वृद्धाश्रम पर्याप्त सामाजिक सहवास और मानवीय स्पर्श प्रदान नहीं करते। पेशेवर देखभाल भावनात्मक प्रेम की जगह नहीं ले सकती।

70% शिक्षक मानते हैं कि वृद्धाश्रम वृद्धों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार नहीं लाते। सुविधाओं और सेवाओं की कमी से वृद्धाश्रम जीवन मात्र बचाते हैं, जीवन नहीं देते।

70% शिक्षक मानते हैं कि आर्थिक दबाव वृद्धाश्रम का एकमात्र कारण नहीं है। सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक कारण अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह सामाजिक उदासीनता और संवेदनहीनता को इंगित करता है।

90% शिक्षक लगभग सर्वसम्मति के साथ मानते हैं कि वृद्धाश्रम भारतीय संस्कृति और परंपराओं के विरुद्ध हैं। यह सबसे प्रबल और निर्णायक भावना है जो वृद्धाश्रमों को सांस्कृतिक रूप से अस्वीकार्य बनाती है।

90% शिक्षक सहमत हैं कि शहरीकरण और एकल परिवार प्रणाली वृद्धाश्रमों की माँग बढ़ा रही है। यह अपरिहार्य सामाजिक परिवर्तन है जिसके साथ नीति और सेवाएँ तालमेल बिठानी होगी।

90% शिक्षक की सर्वसम्मत राय है कि सरकार को वृद्धाश्रमों को विनियमित और सुधारने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। यह नीति निर्माण का जरूरी संकेत है कि वर्तमान स्थिति असंतोषजनक है।

90% शिक्षक अपने माता-पिता के लिए वृद्धाश्रम को व्यावहारिक विकल्प नहीं मानते, यद्यपि समाज के लिए इसे आवश्यक स्वीकार करते हैं। सामाजिक और व्यक्तिगत स्वीकृति के बीच गहरी खाई भारतीय पारिवारिक संस्कारों की शक्ति को प्रदर्शित करती है।

उद्देश्य क्रमांक 2 : यवतमाल शहर के ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी क्र.2 : ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्रश्न का सार	शहरी %	ग्रामीण %	अंतर (%)	प्रवृत्ति
1	वृद्धाश्रम — आवश्यक संस्था	75	43	+32	शहरी अधिक
2	वृद्धाश्रम — काल की आवश्यकता	83	64	+19	शहरी अधिक
3	वृद्धाश्रम — सकारात्मक दृष्टि	67	50	+17	शहरी अधिक
4	वृद्धाश्रम भेजना = पारिवारिक विफलता	75	79	−4	लगभग समान
5	वृद्धाश्रम में अधिक सुरक्षित जीवन	58	43	+15	शहरी अधिक

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

6	पर्याप्त चिकित्सा सेवा मिलती है	58	36	+22	शहरी अधिक
7	अकेलापन व अवसाद की समस्या	33	43	−10	ग्रामीण अधिक
8	वृद्ध स्वेच्छा से जाना पसंद करते हैं	25	18	+7	दोनों असहमत
9	सामाजिक सहवास व मानवीय स्पर्श	42	39	+3	लगभग समान
10	जीवन की गुणवत्ता में सुधार	58	39	+19	शहरी आशावादी
11	आर्थिक दबाव — प्रमुख कारण	67	57	+10	शहरी अधिक
12	वृद्धाश्रम — भारतीय संस्कृति के विरुद्ध	25	46	−21	ग्रामीण अधिक
13	शहरीकरण/एकल परिवार — माँग बढ़ा रहे	83	79	+4	लगभग समान
14	सरकार की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए	83	79	+4	लगभग समान
15	अपने वृद्धों के लिए व्यावहारिक विकल्प	25	18	+7	दोनों नकारात्मक

आलेख क्र.2

ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के प्राथमिक शिक्षकों का वृद्धाश्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

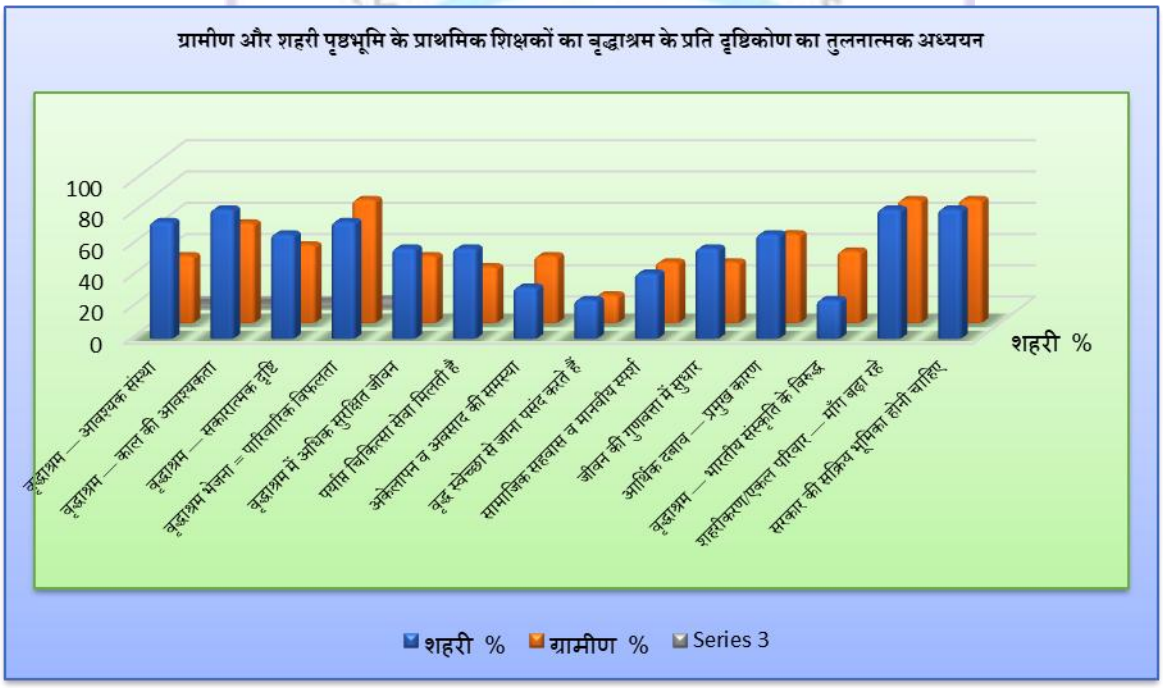

उद्देश्य क्र.2 चे विश्लेषण व अर्थनिर्वेचन

1.आवश्यकता एवं सामाजिक स्वीकार्यता : शहरी शिक्षकों में वृद्धाश्रम को आवश्यक संस्था मानने की प्रवृत्ति 75% है, जबकि ग्रामीण शिक्षकों में यह मात्र 43% है। यह +32% का सबसे बड़ा अंतर इंगित करता है कि शहरी जीवनशैली ,जिसमें एकल परिवार, व्यस्त दिनचर्या और सीमित आवासीय स्थान शामिल हैं,वृद्धाश्रम की स्वीकार्यता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

दोनों वर्गों में 83% शहरी और 64% ग्रामीण शिक्षक इसे "काल की आवश्यकता" मानते हैं ,यह इस बात का संकेत है कि परिवर्तन की अनिवार्यता को दोनों स्वीकार कर रहे हैं, भले ही मात्रा में अंतर हो।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

2.गुणवत्ता एवं जीवन स्तर : चिकित्सा सेवा की उपलब्धता पर शहरी शिक्षक 58% सहमत हैं जबकि ग्रामीण मात्र 36% ,यह +22% का अंतर दर्शाता है कि ग्रामीण शिक्षक वृद्धाश्रमों की सेवाओं पर अधिक संशयी हैं।

अकेलेपन और अवसाद की समस्या पर ग्रामीण शिक्षक (43%) शहरी (33%) की तुलना में अधिक चिंतित हैं,यह ग्रामीण क्षेत्र में पारिवारिक बंधनों की मजबूत भावनात्मक समझ को दर्शाता है।

जीवन गुणवत्ता में सुधार पर शहरी 58% और ग्रामीण 39% सहमत हैं ,शहरी दृष्टिकोण +19% अधिक आशावादी है।

3.सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मूल्य : यह श्रेणी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करती है:

Q12 (भारतीय संस्कृति के विरुद्ध): ग्रामीण 46% बनाम शहरी 25% ,21% का अंतर ग्रामीण शिक्षकों की परंपरागत सोच को उजागर करता है।

Q4 (पारिवारिक जिम्मेदारी की विफलता): शहरी 75% और ग्रामीण 79%,दोनों लगभग सहमत हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है: भले ही शहरी शिक्षक वृद्धाश्रम को आवश्यक मानते हैं, वे इसे पारिवारिक असफलता भी मानते हैं ,यह मानसिक द्वंद्व दर्शाता है।

Q15 (व्यक्तिगत विकल्प): शहरी 25% और ग्रामीण 18%,दोनों वर्ग अपने वृद्धों को वृद्धाश्रम नहीं भेजना चाहते — यह "सैद्धांतिक स्वीकार्यता" और "व्यावहारिक निर्णय" के बीच की गहरी खाई को प्रकट करता है।

4.सामाजिक-आर्थिक कारण एवं सरकारी नीति

Q13 (शहरीकरण/एकल परिवार): शहरी 83% और ग्रामीण 79% ,दोनों सहमत कि संरचनात्मक परिवर्तन वृद्धाश्रमों की माँग बढ़ा रहे हैं।

Q14 (सरकार की भूमिका): शहरी 83% और ग्रामीण 79% ,यह उच्चतम सहमति बिंदुओं में से एक है, जो दर्शाता है कि दोनों वर्ग सरकारी हस्तक्षेप और विनियमन को आवश्यक मानते हैं।

Q11 (आर्थिक दबाव): शहरी 67% और ग्रामीण 57% ,आर्थिक कारण को दोनों वर्ग स्वीकार करते हैं, परंतु शहरी शिक्षक इसे अधिक प्रमुख मानते हैं।

निष्कर्ष

1.शहरी शिक्षक वृद्धाश्रम की आवश्यकता, उपयोगिता और स्वीकार्यता में ग्रामीण से अधिक सहमत हैं

2.ग्रामीण शिक्षक सांस्कृतिक परंपरा और पारिवारिक मूल्यों के प्रति अधिक संवेदनशील और पारंपरिक हैं

3.दोनों वर्गों में सर्वसम्मति — शहरीकरण माँग बढ़ा रहा है और सरकार को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए

4.सबसे बड़ा विरोधाभास: दोनों वर्ग वृद्धाश्रम को "आवश्यकता" तो मानते हैं, किंतु अपने परिवार के लिए नकारते हैं (15–25%)

5.ग्रामीण शिक्षक वृद्धाश्रम सेवाओं की गुणवत्ता पर अधिक संशयी हैं (चिकित्सा, सुरक्षा, देखभाल)

6.Q8 (स्वैच्छिक निवास) पर दोनों की न्यूनतम सहमति (25% व 18%) — वृद्ध स्वेच्छा से नहीं जाते, यह सामान्य धारणा है

7.शिक्षित वर्ग होने के बावजूद दोनों समूहों में पारिवारिक दायित्व की भावना अत्यंत प्रबल है

उद्देश्य क्रमांक 3

शोध के आधार पर वृद्धाश्रम नीति और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु व्यावहारिक सुझाव देना।

वृद्धाश्रम नीति संबंधी सुझाव

सुझाव १ राष्ट्रीय वृद्धाश्रम नियमन नीति का निर्माण

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शोध में 80% शिक्षकों ने सरकारी हस्तक्षेप की माँग की है। केंद्र सरकार को "राष्ट्रीय वृद्धाश्रम नियमन अधिनियम" बनाना चाहिए। प्रत्येक राज्य में वृद्धाश्रम नियामक प्राधिकरण (Regulatory Authority) स्थापित किया जाए।वृद्धाश्रमों का अनिवार्य पंजीकरण, निरीक्षण और मूल्यांकन प्रतिवर्ष किया जाए।मानकों का उल्लंघन करने वाले वृद्धाश्रमों पर दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान हो।

सुझाव २ ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धाश्रम जागरूकता अभियान

शोध में ग्रामीण शिक्षकों में वृद्धाश्रम के प्रति संशय और अज्ञानता स्पष्ट हुई।ग्राम पंचायत स्तर पर "वृद्ध कल्याण जागरूकता शिविर" आयोजित किए जाएँ।ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धाश्रम की सुविधाओं और अधिकारों की जानकारी का प्रसार किया जाए।स्थानीय भाषाओं में जानकारी सामग्री तैयार कर वितरित की जाए।आँगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को वृद्ध कल्याण की जानकारी से सुसज्जित किया जाए।

सुझाव ३ चिकित्सा सेवाओं का सुधार और विस्तार

शोध में ग्रामीण शिक्षकों का 64% वृद्धाश्रम की चिकित्सा सेवाओं पर संशयी पाया गया।प्रत्येक वृद्धाश्रम में पूर्णकालिक चिकित्सक और नर्स की नियुक्ति अनिवार्य की जाए।वृद्धाश्रमों को सरकारी अस्पतालों से जोड़ा जाए Telemedicine सुविधा दी जाए।मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ (मनोचिकित्सक / काउंसेलर) अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएँ। निःशुल्क नियमित स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन किया जाए।

सुझाव ४ वृद्धों की स्वैच्छिकता और सम्मान की रक्षा

शोध में 80% शिक्षक मानते हैं कि वृद्ध स्वेच्छा से वृद्धाश्रम नहीं जाते। वृद्धाश्रम में प्रवेश से पहले वृद्ध की स्वैच्छिक सहमति अनिवार्य कानूनी प्रक्रिया बनाई जाए।"वृद्ध अधिकार संरक्षण समिति" का गठन प्रत्येक जिले में किया जाए।वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की शिकायत के लिए हेल्पलाइन स्थापित की जाए।वृद्धाश्रम में वृद्धों की गरिमा और स्वायत्तता सुनिश्चित करने वाले नियम बनाए जाएँ।

सुझाव ५ सामाजिक-भावनात्मक कार्यक्रमों की अनिवार्यता

शोध में 60% शिक्षक मानते हैं कि वृद्धाश्रम में सामाजिक सहवास अपर्याप्त है।वृद्धाश्रमों में सांस्कृतिक, मनोरंजन और सामाजिक कार्यक्रम अनिवार्य किए जाएँ।इंटरजेनरेशनल कार्यक्रम — स्थानीय विद्यालयों के छात्रों का नियमित भ्रमण आयोजित हो।योग, ध्यान, कला और संगीत जैसी गतिविधियाँ नियमित रूप से संचालित की जाएँ।परिवार से संपर्क बनाए रखने के लिए वीडियो कॉलिंग सुविधा और पारिवारिक भ्रमण प्रोत्साहित किया जाए।

सुझाव ६ आर्थिक सहायता नीति

शोध में 60% शिक्षक मानते हैं कि आर्थिक दबाव वृद्धाश्रम का प्रमुख कारण है।सरकार "वृद्ध पेंशन योजना" को सार्वभौमिक और पर्याप्त बनाए।गरीब परिवारों को वृद्धों की देखभाल के लिए मासिक आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।आयकर में छूट उन परिवारों को दी जाए जो वृद्धों की घर पर देखभाल करते हैं। सरकारी वृद्धाश्रमों में निःशुल्क / रियायती सेवाएँ BPL परिवारों के वृद्धों को प्रदान की जाएँ।

सुझाव ७ ग्रामीण वृद्ध देखभाल केंद्रों की स्थापना

शोध में ग्रामीण शिक्षकों की पारंपरिक सोच और घर को सुरक्षित मानने की प्रवृत्ति स्पष्ट हुई।ग्रामीण क्षेत्रों में "डे-केयर वृद्ध सेवा केंद्र" स्थापित किए जाएँ जहाँ वृद्ध दिन में सेवाएँ लें और रात को घर रहें।मोबाइल हेल्थ वैन के माध्यम से ग्रामीण वृद्धों तक चिकित्सा सेवाएँ पहुँचाई जाएँ। ग्राम स्तर पर वृद्ध सहायक (Elderly Helper) नियुक्त किए जाएँ। सामुदायिक वृद्ध देखभाल मॉडल को सरकारी प्रोत्साहन दिया जाए।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु सुझाव

सुझाव ८ प्री-सर्विस प्रशिक्षण में वृद्ध कल्याण विषय का समावेश

शोध दर्शाता है कि शिक्षकों में वृद्धाश्रम संबंधी जानकारी का अभाव है।D.Ed., B.Ed., M.Ed. पाठ्यक्रम में "वृद्ध मनोविज्ञान और समाजशास्त्र" विषय को शामिल किया जाए।"सामाजिक जिम्मेदारी और वृद्ध कल्याण" पर अनिवार्य इकाई जोड़ी जाए।प्रशिक्षण में वृद्धाश्रम भ्रमण (Field Visit) को अनिवार्य किया जाए।केस स्टडी और परियोजना कार्य के माध्यम से वास्तविक समझ विकसित की जाए।

सुझाव ९ इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यशाला

शोध में शहरी-ग्रामीण दृष्टिकोण का अंतर स्पष्ट हुआ — इसे पाटने की आवश्यकता है।सेवारत शिक्षकों के लिए "वृद्ध कल्याण और सामाजिक संवेदनशीलता" पर वार्षिक कार्यशाला आयोजित की जाए।ग्रामीण और शहरी शिक्षकों का संयुक्त प्रशिक्षण आयोजित कर अनुभव साझाकरण (Peer Learning) को प्रोत्साहित किया जाए। विशेषज्ञ व्याख्यान — समाजशास्त्री, मनोचिकित्सक और वृद्ध कल्याण विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाए। ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल भी विकसित किए जाएँ ताकि ग्रामीण शिक्षक भी लाभान्वित हो सकें।

सुझाव १० सामाजिक संवेदनशीलता का विकास

शोध में वैचारिक द्वंद्व (Cognitive Dissonance) स्पष्ट हुआ — शिक्षक वृद्धाश्रम को सामाजिक आवश्यकता मानते हैं, परंतु व्यक्तिगत रूप से अस्वीकार करते हैं।प्रशिक्षण में "सहानुभूति विकास सत्र" (Empathy Building Sessions) शामिल किए जाएँ।रोल-प्ले और सिमुलेशन — शिक्षकों को वृद्धों की भूमिका में रखकर अनुभव दिया जाए।वृद्धों के साथ संवाद सत्र (Interactive Sessions with Elderly) आयोजित किए जाएँ।व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर को दूर करने हेतु परामर्श सत्र रखे जाएँ।

सुझाव ११ पाठ्यक्रम में वृद्ध कल्याण का समावेश

शिक्षक भावी पीढ़ी के निर्माता हैं — उनके माध्यम से समाज की सोच बदली जा सकती है।प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में "वृद्धजन सम्मान" पर पाठ अनिवार्य रूप से शामिल किए जाएँ।"दादा-दादी दिवस" जैसे कार्यक्रम विद्यालयों में नियमित रूप से मनाए जाएँ।शिक्षकों को इन कार्यक्रमों के संचालन का प्रशिक्षण दिया जाए।"सामाजिक जिम्मेदारी" (Social Responsibility) को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाए।

सुझाव १२ — ग्रामीण शिक्षकों के लिए विशेष कार्यक्रम

शोध में ग्रामीण शिक्षकों में अधिक रूढ़िवाद और संशय पाया गया।ग्रामीण शिक्षकों के लिए विशेष उन्मुखीकरण कार्यक्रम तैयार किए जाएँ।स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाए।उत्कृष्ट वृद्धाश्रमों का भ्रमण आयोजित कर ग्रामीण शिक्षकों की धारणा बदली जाए।सफल वृद्धाश्रम प्रबंधकों के अनुभव साझा करने के लिए संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

सुझाव १३ — शोध और नवाचार को प्रोत्साहन

शोध दर्शाता है कि वृद्धाश्रम नीति के लिए प्रमाण-आधारित शोध (Evidence-Based Research) आवश्यक है।शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में वृद्ध कल्याण शोध केंद्र स्थापित किए जाएँ।शिक्षकों को लघु शोध परियोजनाएँ (Action Research) करने के लिए प्रोत्साहित और पुरस्कृत किया जाए।विश्वविद्यालयों और NGOs के साथ सहयोग स्थापित किया जाए।शोध निष्कर्षों को नीति निर्माण से जोड़ा जाए।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

संदर्भ ग्रंथ सूची

Best J. W. Research in Education, Prentic Hall of India, 1963

Ackoff, Robert L. The Design of Social Research, Chicago, 1953

Connor L. R. statistics &theory in practice 1936

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/initiatives-under-national-education-policy-2020

https://byjusexamprep.com/uppsc/new-education-policy-in-hindi